Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 5, Sept-Oct – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 04/10/2020 **Accepted on : 16/10/2020** **Publication Date: 31/10/2020**

रुख़ बदलते गांव से गुमसुम होने वाले काश्तकार

Poet. Prof. Dr. Manu
Professor, See Sankaracharya University, Kalady
Email - drmanughazal@gmail.com,

There was no news in the newspapers
That a River was killed yesterday. The death of river was very rare.
After several months,
The youngsters were playing football
On the ruined soil of the dead river.
In the eve of Yesterday
I saw a scene of cutting tree on the way.
People are simply passing through the way.
Only Some crows made noise, After a few times they flew elsewhere.
More mountains are being killed more than rivers;
it is not a breaking news for medias
Slain mountains and rivers are martyrs
In the newspaper of my heart.
(Some crows made noise : **By Poet. Prof. Dr. Manu)**

Key words : केरल, काश्तकार , खेत , नारियल , तालीम, जय जवान जय किसान, शोषण, क़र्ज़, बीमारी।

इंसानी फिकरों में जो बदलाव आता है, वही सारे बदलावों की बुनियाद है । मगर फितरत के सामने सभी बदलाव नाचीज़ है. इसके लिए दुनिया गवाह है, इतिहास साक्षी है । वक़्त के गुजरान के साथ रुख़ ए दुनिया भी बदल जाता है । बदलाव तयशुदा बात है । इंसान का फिकर बदल जाता है । किसी को तरक़्क़ी की फ़िकर में ज़मीनों की शकल बदलाने में कोई दर्द नहीं होता है । कोई गांव की हरियाली पसंद करता है तो और कोई शहर की जंगल ए इमारत ज़्यादा पसंद करता है । यह जम्हूरों की लगाव की बात है। लेकिन खाने पीने की बात जब कभी आती है हमें याद और किसी की नहीं आती है सिर्फ गाँव व काश्तकार की आती है । पूरे हिंदुस्तान की आत्मा गाँव में ही रहती है । नौकरी की तलाश में जुवा गाँव छोड़कर शहर जाते है । यह काश्तकारों का मुल्क है, किसानों का देश है, ज़मींदारों का वतन है । हिन्दुस्तान के दूसरे गावों की तुलना में केरलीय गावों की अपनी खासियत व खामियां होती हैं ।

वक़्त वक्त पर होने वाला बदलाव केरल के गांव के रुख़ की ख़ासियत व ख़ामियाँ ही नहीं हैं ; बल्कि सारे वतन की सारी जगहों के गाँवों की भी हैं । मगर बदलाव के बाद होने वाला असर अलग अलग होगा । गांव खेती बाड़ी से ताल्लुक रखने वाले लोगों का बसेरा है । वहां मज़दूर रहते हैं, काश्तकार रहते हैं, उनसे संबंधित सभी लोग रहते हैं । गांव संयुक्त परिवार का खेमा है । इतिहास का पन्ना पलटने पर हमें मालूम हो जाएगा कि अक्सर सभी तहज़ीब की शुरुआत गांव से ही हुई है । लेकिन जब औद्योगिक क्रांति ज़ोर पकड़ी तो बहुत सारे लोग कारख़ानों में नौकरी की तलाश में शहर की ओर बहने लगे । धीरे धीरे गांव बस्ती का रुख़ अपनाने लगा । फिर बस्ती शहर का और शहर महानगर का । गांव अंधेरे के काले चादर ओढ़कर सांझ के आते ही सोने की शुरुआत में रहने लगेगा । गांव की लाल कच्ची राहों में तन्हाई व खामोशी का शासन शुरू हुआ होगा । दूर इधर उधर जलने वाली बत्तियों के खंभे का मंज़र खूब सुहाना सा लगता है । दरअसल जलती बत्तियों के खंभे ही गावों के पहरेदार हैं । कहीं कहीं खामोश खंभे दिखाई देंगे । ये खंभे गांव की गुरबत का निशाना है । बैलगाड़ी, इक्का दुक्का, पनहारी, और गऊ, रँभाई, भेड़, बकरी, बछड़े, मुर्गा, मुर्गी की आवाज़ें आदि निशान बरदार देनेवाला है । रात आती है तो गाँव गहरी नींद में पड़ जाता है । सारे शोर शराबे ख़त्म हो जाते हैं, गांव का सोना खूब अजीब लगता है ..... मगर शहर की नसीब में सोने की बात बिल्कुल लिखी नहीं है । सोने वाले गांव और ना सोने वाले शहर में इतना बदलाव आया है कि आज सोने गांव से गुमसुम हो गए हैं । पहले काश्तकार ज़मीन से सोना उगलवाते थे । आज शहर सोनेदार बन गए । यह एक बदला हुआ ग्रामीण परिवेश का रुख़ है । पहले गांव छोड़कर लोग शहर जाते थे और शहर दूर दूर के अलग-अलग गांवों से आने वाले लोगों के जम जाने के कारण अपनी शक्ल बदलने लगा है । धीरे धीरे पास के गांव पर शहर का हमला होने लगा है, योरीश होने लगी है और गांव

शहर बनता जा रहा है। शहर गांव की ओर आने लगा है। शाहरीय रुख़ की खासियत गांव के रुख पर भी पड़ने लगा है। गांव भी शहर बनता जा रहा है, गांव का रुख पूरा पूरा बदलने लगा है।

हिंदुस्तान के गांव से केरल के गांव बिल्कुल अलग दिखाई देते हैं; क्योंकि केरल राज्य पूरा पूरा एक गांव है। गांव को अलग कर देना बहुत ही मुश्किल है; क्योंकि गांवों के सरहद पर भी लोग रहते हैं। गावों के बीच में एक सरहद बांधना बहुत मुश्किल है। उसका माना यह नहीं है कि केरल में शहर नहीं हैं। हैं। मगर गांवों के बीच में खाली जगहें बिल्कुल नहीं है। घर ही घर भरे हुए होते हैं। हर घर के लिए अपना अपना आहता है, अपना अपना आंगन है, हर घर में कुआ है। पूरा गांव हरा भरा दिखाई देता है। हवाई जहाज से अगर कोई सफ़र करें तो केरल उनके लिए सिर्फ एक जंगल सा लग जाएगा। हिंदुस्तान के नक्शे को सामने रख कर देख ले तभी मालूम हो जाएगा केरल जंगलों में बसता है।

आज केरल में रिवायती तौर का पंचायत नहीं है। सरपंच भी नहीं है। केरल के गांव गावों की संकल्पना के बाहर है। तीस चालीस परिवारों का एक समूह, अपना अपना आचार विचार, अपना अपना रवैया। आज आदिवासियों या वनवासियों के पास ही केरल के गांव बचे हैं।

खेती करने के लिए हमें पानी की जरूरत है। केरल ऐसा एक राज्य है जिसमें 44 नदियां बहती हैं। केरल की नदियों की लंबाई पन्द्रह किलोमीटर से ज्यादा है। सबसे बड़ी नदी पेरियार की लंबाई 244 किलोमीटर है तो सबसे छोटी नदी कासरगोड ज़िले की मंजेश्वरम नदिया है। छावलीस नदियों में इकचलीस नदियां पश्चिम की ओर बहती हैं तो सिर्फ तीन पूर्व की ओर। इस प्रकार केरल नामक छोटे से गांव में नदियों का बोलबाला है। लेकिन पता नहीं है केरल से क्यों काश्तकार गुमसुम हो गये हैं ? इसकी कई वजहें हैं।

आज केरल ग्राहक संस्कृति या सर्फीन सफाकत का खेमा बन गया है। सारे के सारे धान, अनाज, सब्जी सब केरल के बाहर से आते हैं। केरल के लोग केरल के बाहर की खेती पर भरोसा रखकर जीते हैं और केरल के बाहर जब सख्त बारिश होती है तब केरल के दिलों का धड़कन बढ़ जाती है कि अगले साल धान अनाजों की कीमत ज़रूर ही बढ़ जाएं।

सफरीन सफ़ाकत का खेमा बनना काश्तकारी की बरबादी का नाम है। केरल के लोग नौकरी की तलाश में घर बार छोड़ कर विदेश चले जाते हैं। वहां किसी भी तरह का काम करने के लिए भी केरल के लोग तैयार हो जाते हैं। केरल के नर्स पूरे देश विदेशों के अस्पतालों में काम करती हैं। केरल के मुसलमान लोग खासकर 'गल्फ' में चले जाते हैं।

जब पूरी दुनिया में कोरोना वायरस का ज़ोरदार हमला हुआ तभी हमें भी पता चला कि केरल के लाखों मर्दों औरत बाहर की ज़िंदगी जी रही हैं। केरल के गांवों में खेती-बाड़ी करने वाली औरतों की तादाद बहुत बहुत कम है। इसलिए केरल में खेती बाड़ी कम है। सब कहीं नारियल के पौधे लगाए जाते हैं। इस के लिए खर्च कम ही चाहिए। नारियल को केरा वृक्ष भी कहते हैं। इसी की वजह से इस राज्य का नाम भी केरल पड़ा है। मगर फिलहाल की दिलचस्प बात यह है कि नारियल के पेड़ों पर चढ़ने के लिए आज मज़दूरों को नहीं मिल जाता है। डेढ़ महीने में नारियल पक्का हो जाता है, और नारियल को काटना चाहिए। लेकिन आजकल तीन चार महीनों में एक बार ही नारियल के पेड़ से नारियल काटे जाते हैं। पेड़ पर चढ़ने के लिए मज़दूरों को नहीं मिल जाते हैं। यह काम करने के लिए केरल के बाहर से लोग आते हैं। यह केरल के गावों में होनेवाले बदलते परिवेश की जीती जागती तस्वीर है। हां, केरल के गावों का रुख़ ही नहीं शक्ल ही बदलने लगी है।

केरलीय खेतों में काम करने के लिए मर्दों औरत नहीं आ जाते हैं। क्योंकि दूसरे काम करने पर अच्छा तनख्वाह मिल जाता है। एक राज मिस्त्री को एक दिन के काम के लिए तक़रीबन एक हज़ार रुपया मिलता है। सुबह नौ बजे से काम शुरू हो जाएगा शाम पांच बजे खत्म हो जाएगा। दोपहर का खाना और दो वक्त की चाय मुफ्त मिल जाएंगे। मामूली काम करने वाले मज़दूर को आठ या नौ सौ रुपए मिलते हैं और औरतों को भी सात सौ रुपए मिल जाते हैं। खेती-बाड़ी करने पर उतना दे नहीं पाएंगे, इसलिए काश्तकार खेती नहीं करते हैं। खेती बाड़ी आज केरल की खेती के मामले में कीमती खर्चीली बात बन गयी है। खेती के हिसाब में काश्तकार को नुकसान ही मिल जाता है। काश्तकारों केलिए खेती के मामले में नफ़ा ख़्वाब है और मुनाफ़ा हक़ीक़त है, मगर काश्तकारों की खुदकुशी हिन्दुस्तान के दूसरे इलाक़ों की बनिस्बत केरल में बहुत बहुत कम है। बे सूद पर काम करना कोई मज़दूर या कोई किसान नहीं चाहेगा। इसलिए केरल के गावों से खेती-बाड़ी गुमसुम हो रही है।

तालीम के मामले में केरल के लोग बहुत आगे हैं। तालीम हासिलशुदा कोई जुवा इसी तरह का काम करना पसंद नहीं करता है। वे सफेद पोशाक नौकरी करना चाहते हैं। अगर कोई जुवा काश्तकार बनकर अपनी जिंदगी केरल के गांव में गुजारना चाहता है तो उनकी पारिवारिक जिंदगी टूट जाएगी ; क्योंकि शादी के बाजार में काश्तकारों की कीमत बहुत कम है। शादी के लिए लड़कियों को मिलना नामुमकिन बन गया है। आज केरल में बे शादीशुदा युवकों की तादाद बढ़ने लगी है। किसी काश्तकार से शादी करना आज केरल के अक्सर पढ़ी लिखी लड़कियाँ नहीं चलती हैं। इसलिए खेती-बाड़ी से जवान लोग एकदम पीछे हट जाना चाहते हैं। ये बातें गवाह हैं गांव की बदलते रुखों का, बदलती शक्लों का, बदलते परिवेशों का।

गांवों के रुख बदलने से धीरे-धीरे माहौल का रुत भी बदल गया है । खेती बाड़ी से अलग होकर सफेद पोशाक काम करके अपना रुतबा बढ़ाना ही केरल के पढ़े लिख लोगों का दिल पसंदीदा फिकर है । आला तालीम याफ़्त करने के बाद/(उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद) युवक और युवती विदेश में नौकरी ढूंढना चाहते हैं । दुनिया के शायद ज्यादातर देशों में नर्स के रूप में केरल की लड़कियां काम कर रही हैं । वैसे ही अपने वतन के कई अस्पतालों में केरल की लड़कियां नर्स के तौर पर काम कर रही हैं और युवा अमेरिका, कनाडा, लंदन, यूरोप और गल्फ में भी काम करने के लिए जाते हैं तो केरल बाहर के लोगों का इंतज़ार करने लगा है । हकीक़त यह है की ज़मीन में काम करने के लिए यहां के युवक और युवतियों को मिलना बहुत ही मुश्किल है । इसलिए अपने वतन के दूसरे राज्यों से काम के वास्ते लोग केरल के गांवों में आने लगे हैं । यह पहले कभी नहीं हुआ था । यह जदीद दौर में दिखाई देने वाले बदलता हुआ केरलीय गावों का रुख़ है।

कोरोना वायरस की योरशो हमला जब सामने आये तब ही मामूली औसत लोगों ने यह जान लिया की केरल के लोग बाहर ही रहते हैं और अपने राज्य के बाहर के लाखों लोग इधर काम कर रहे हैं । घर, आँगन, ज़मीन आदि पर काम करने के लिए, इमारतों की तामीर के लिए, होटलों के काम में जुड जाने के लिए, दुकानों में काम करने के लिए बहुत सारे लोग केरल की ओर आते हैं और वैसे ही केरल का यह पूरा गांव एक कॉस्मोपॉलिटन सिटी बन गया है । उत्तर प्रदेश के नोएडा में एक चौराहा है; इस चौराहे का नाम 'लेबर' चौक है और वैसे ही केरलीय गांवों में 'लेबर' चौक दिखाई देने लगा है । लेकिन नाम 'लेबर' चौक नहीं है । लेकिन लोग दिहाड़ी काम के लिए यहाँ जुड़ जाते हैं और यहां गौतमबुद्ध नगर, नोएडा, सेलाकुई, बरौला के 'लेबर' चौक की तरह मज़दूरों का पंजीकरण नहीं होता है । हिन्दुस्तान के दूर पास के राज्यों के कोने कोने से आये लोगों का केरलीय शहरों व गावों में जुड जाना 'मिनी इंडिया' का एहसास दिलाता है । हर सुबह के जुड़ाव में असम, बंगाल ओडीसा, यूपी, बिहार, तमिलनाडू आदि जगहों के लोग इक्कट्ठे हो जाते हैं । यह बदलते गांव के नये रुख हैं , हर दिन चौक में 'मिनी इंडिया' रूपायित होता है । 'मिनी इंडिया' कॉस्मोपॉलीटियन शहरों की है । यह केरल के बदलते ग्रामीण परिवेश का रुख़ है । केरलीय समाज के ज़रूरतमंद लोग अपने अपने काम के लिए फोन करके अपने काम के क़ाबिल मज़दूरों को यहाँ से चुन लेते हैं । फिर ये चुनिंदा मजदूर गांव की तरह बस गाड़ी में सफर करने लगते हैं । ज़रूर ही यह एक नई बात है । गांवों के पुरखों की दास्तान में इस तरह का कोई मंजर पहले नहीं था । यह मंजर आज का है, जदीद दौर की बात है । गाँव के कोई बुज़ुर्ग पारदर्शी भी आइन्दा होनेवाले इस वाकये की परिकल्पना नहीं कर पाए । बाहर से गाडी में अपनी ज़मीन में काम करने केलिए आनेवाला मंज़र बदलते केरलीय ग्रामीण परिवेश की खूबसूरत मिसाल है ।

गांव के लोग अपनी मादरी जुबां व बोली का इस्तेमाल करते हैं । लेकिन ज़मीन पर काम करने के लिए आये लोगों से केरलीय गाँव के लोग धीरे धीरे टूटी फूटी हिंदी में बातें करने लगे हैं । यह गाँव की तहज़ीब में आया हुआ नया बदलाव है । बदलाव से केरलीय लोगों को अपनी ज़र ज़मीन में रहकर औरों से हिंदी में बातें करने का सुनहरा मौक़ा ही मिला है । बस इतना कि नहीं है, फिलहाल गांव की तरफ दौड़ने वाली गाड़ियों में जगह का नाम हिंदी में भी लिखा जाता है । खासकर एर्नाकुलम जिले के पेरुंबावूर की सार्वजनिक बस गाड़ियों में जगहों का नाम हिंदी में भी लिखा हुआ है । यह केरल के परिवेश में आया बहुत बड़ा बदलाव है; क्योंकि केरल के सरहद के उस पार तमिलनाडु है । वहाँ हिन्दी रोकी गयी है ।

किसान की इबादत हमें करना है, उनका नुक्सान हमारा नुक्सान है, हमारा नुक्सान वतन का नुक्सान है । तालीम के वक़्त कई बार हम ने ज़ोर ज़ोर से कहा था 'जय जवान जय किसान' और हमने पोस्टर भी लगाया था । बच्चों को पढ़ाया भी था । लेकिन 'जय जवान जय किसान' जो नारा है उसे आज मैं इसी तरह बताना चाहूंगा, लिखना, फैलाना चाहूंगा कि 'जय किसान जय जवान' । सरहद पर जवान हमारी रक्षा करें । लेकिन यह किसान उन्हें भी खिलाने पिलाने वाला है । इसलिए सार्थक नारा 'जय किसान जय जवान' है । माननीय आदरणीय भूतपूर्व प्रधान मंत्री भूतपूर्व प्रधान मंत्री शास्त्री जी के नारे को मज़बूत बनाते हुए आदरणीय भूतपूर्व प्रधान मंत्री वाजपेय जी ने 'जय जवान जय किसान' नारे में अपनी नज़र की बात जोड़कर उस नारे को और भी नया बनाया । 'जय जवान जय किसान जय विज्ञान'। मगर मेरे बदलते हुए ख्याल इस नारे को 'जय विज्ञान जय किसान जय जवान' के रूप में देखना चाहते हैं। बदलाव के नाम पर मैं इस शोध लेख में गद्य के साथ गद्य कविता भी जोड़ के लिखना चाहता हूँ । यह भी एक बदलाव है । जो शोध लेख है वह गद्य में होने की कोई जरूरत नहीं है ऐसा मेरा विचार है ।

अखबारोंमें यह खबर नहीं आयी कि

कल किसी नदी की मौत हुई थी.
नदियों की मौत नादिरतरीन है ।
कई महीनों के बाद
मरी हुई नदी की रू ए ज़मीन पे

युवा गेंद खेल रहे थे ।
कल शाम को पेशे नज़र
सर ए राह पे पेड़ काटने का मंज़र
मैं ने देखा था । .
कुछ कौए परिन्दे शोर मचाते थे फिर वे भी कहीं दूर उड़ गये ।
नदियों से ज्यादा
पहाड़ मारे जाते हैं
वह भी अखबारों के लिए
कोई क़ीमती खबर नहीं है ।
पहाड़ और नदियाँ मेरे दिल के अखबारों में शहीद हैं ।
नदियों की मौत से हजारों की प्यास बढ़ने की गुंजाइश है
पहाड़ों के मारे जाने से पानी का बचाव मुश्किल बन जाए
और तराइयाँ गायब हो जायें ।
पेड़ काटे जाते हैं, तरक़्क़ी के
नाम पर धरती को नंगा किया जाता है ।
मौसम का रंग बदल जाता है यह भी मामूली बात बन गयी है।
पहले केरलीय
मौसमी फेहरिस्त में
आंधी का नाम नहीं था तूफान का नाम नहीं था बाढ़ का नाम भी ।
दो साल पहले केरल में बाढ़ आयी मौत भी हुई ।
हिन्दुस्तान के नक़्शे पे एक बार नज़र डालने पर मालूम हो जाएगा कि
केरल साहिल ए सागर पर बसा हुआ है ।

केरल अरब सागर की शहज़ादी है ।
अरब यहाँ से कोसों मील दूरी पे है । फिर भी किसने केरल के अपने सागर को
अरब नाम दे दिया है ?
बदलते मौसम के साथ
दूरदर्शन से हमें खबर मिलती है कि
कल शाम को केरल के साहिल पर
तूफ़ान का बड़ा दस्तक होगा
कल स्कूल बंद हैं.....
धीवर समुन्दर न जाएँ .....
यह पूरे गाँवो शहर आया नया बदलाव है ।
केरल की तहज़ीब में नारियल, रबड़,
नदियाँ व समुन्दर का असर बहुत गहरा है ।
केरल में सब कौम, मज़हब के लोग मिल जुलकर रहते हैं
अलग अलग बस्तियों व गलियों में नहीं । साहिल पर मछुवारों का गाँव है।

चुनाव में फिलहाल धीरे धीरे मज़हबी रंगों का खेल शुरू हुआ है ।

यह केरल की राजनीति/सियासत में आया नया बदलाव है ।

शहरों की जिंदगी भी ज़िन्दगी है
मगर इसमें गन्दगी ज़्यादा पड़ गयी है ।
गाँवों की ज़िन्दगी भी ज़िन्दगी है

मगर इसमें सादगी ज़्यादा पड गयी है ।
संजीदगी बात यह है कि
कोरोना वाइरस के हमले से
हमें गावों की ज़िन्दगी कशिश करने लगी है ।
कोरोना वाइरस एक चेतावनी है नए बदलाव की ।
कामबंदी की वजह हम भूखों मरने वाले थे ।
लेकिन इसकी खबर अभी तक ना आयी है ।
इस के लिए शुक्रिया बड़े पैमाने पर
हमें गावों के किसानों को अदा करना है ।
जय किसान जय जवान ।

फितरत पर लगाने वाली किसी भी चोट को
हम बर्दाश्त नहीं करेंगे ।
तरक्क़ी के नाम पे होनेवाले बदसूरत बदलाव
हमें कभी मंज़ूर नहीं है ।

क़र्ज़ पे लिए गऊ बकरियों के कानों पे
पीले रंग का निशाना लगाया जाता है ।
बैंकों से क़र्ज़ लेनेवाले काश्तकारों को किसान क्रेडिट कार्ड दिया जाता है ।
पता नहीं है कब बैंकों से कर्ज लेने वाले किसानों के कानों पे
पीले रंग का निशाना लगाया जाए ।
बुढ़ापे में कोई मर जाए वह आम बात है,
बीमारियों से कोई मर जाए वह खास बात है
भूख से कोई मर जाए वह कर्बनाक है ।
मगर कर्ज के नाम पर कोई खुदकुशी कर के मर जाए तो
वह जोखिम भरी बात है ।

गाँवों में क़र्ज़ के नाम पर लोगों की खुदकुशी नया बदलाव है । शहरों में अलग अलग बैंकों की जीतनी शाखाएं हैं शायद उतनी ही शाखाएँ गावों में भी है । बैंकों की तरक्की किमती खबर है । बैंकों की तरक्की क्यों होती है ? वह खबर ही नहीं है । सूद शोषण का एक साधन है । वह किसानों व आम लोगों के पसीने वा खून चूस लेता है । पहले हमने ऐसा कभी नहीं सुना था कर्ज भी हमारे गांव की एक बीमारी है । अक्सर क़र्ज़ ना लिए कोई परिवार हमारे गांव में नहीं होगा; वह शायद 'होम लोन के वास्ते होगा, सोने गिरवी रखकर होगा, 'पर्सनल लॉन ' के नाम पर होगा, किसी भी तरह का लॉन होगा । जो भी हो कर्ज भी मेरी नजर में एक बीमारी है ।

आइन्दा पीढ़ी को खोये हुए गावों को दिखाने केलिए, एक गांव को बचा के रखना चाहिए । गांव को तस्वीरों में देखने की नौबत ना देना रब । तस्वीरें भी काबिल नहीं है, पगडंडियों की खुबसूरती का एहसास दिलाने में । चांदनी रात में खेतों का मंजर खूब सुहाना सा लगता है । खेतों के झींगुर की आवाज आज मेरे लिए एक आंदोलन है । कहा जाता है कि हर आंदोलन में एक समझौता होता है । अँधेरे दूर होने तक झींगुर की आवाज़ रहेगी । इसमें कोई समझौता नहीं है । अँधेरे के जाने, उजाले के आने तक के किसी भी समझौते से समझौता ना करनेवाले झींगुर की आवाज़ का, उसके आवास का रफा-दफा हमने कर लिया है । मौसम का रंग बदल गया है । बहार में भी बदलाव आया है । तूफान ने नया नया नाम अपना के शोर मचाते हुए आता है । फिर भी हमें उम्मीद है .....

(For strengthening the slogan of Hon. Ex. Prime Minister Shastri's 'Jai Jawan Jai kisan', Hon. Ex. Prime Minister Vajpayee made the slogan as 'Jai Jawan Jai kisan Jai vigyan' by adding his point of view to the slogan. But my changing thoughts want to see this slogan as 'Jai Vigyan Jai Kisan Jai Jawan')